चौधरी PHOTOSTAT

"I don't love studying. I hate studying. I like learning. Learning is beautiful."

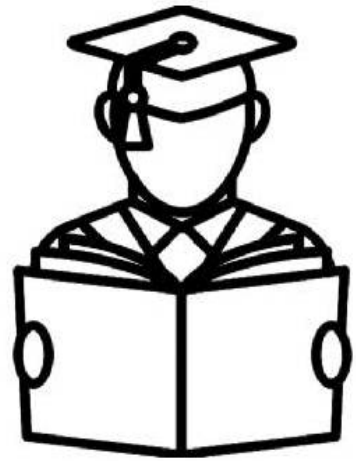

"An investment in knowledge pays the best interest."

Hi, My Name is

हिंदी साहित्य

UGC NET

(P1) → (5 qes)

भाग 'क'

1. ≡ 50 number
2. ≡
3. ≡
4. ≡

भाग 'ख'

5. ≡ 50 number
6. ≡
7. ≡
8. ≡

(P1)
→ हिन्दी भाषा / देवनागरी लिपि का विकास
→ हिंदी साहित्य का इतिहास
आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिक काल

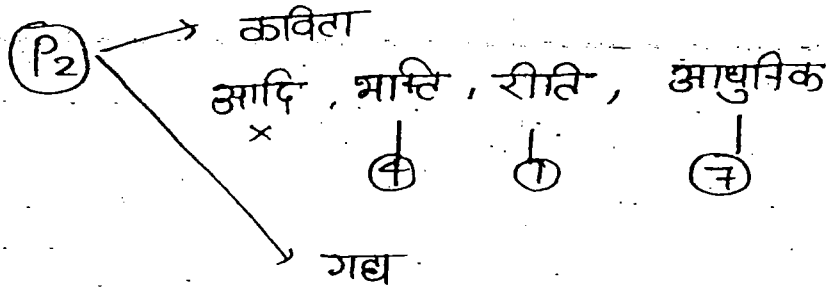

गोदान, मैला आँचल, दिव्या, महा भोज - उपन्यास — ④

भारत दुर्दशा, स्कन्दगुप्त, आषाढ का एक दिन ← नाटक — ③

कहानी — ②

निबन्ध — ②

कहानी → प्रेमचंद्र की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ , एक दुनिया - समानान्तर

निबन्ध → चिन्तामणि , निबन्ध निलय

क्षमताएँ :-

→ लेखन क्षमता
→ उदाहरण / उद्धरण
→ अशुद्धियाँ न करें

Books

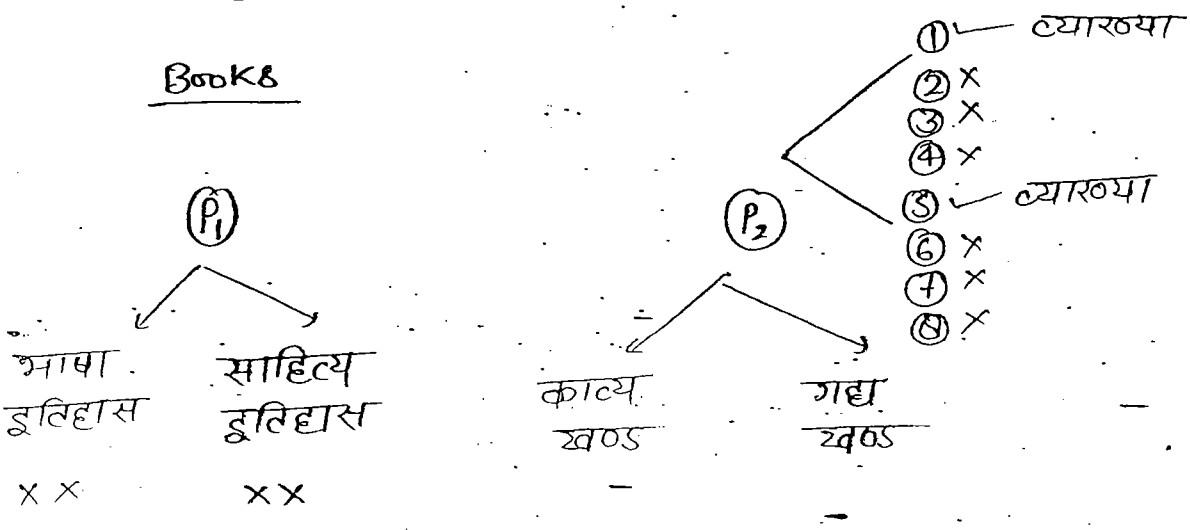

कहानी

प्रेमचंद्र की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ (प्रेम पंजूषा)

ईदगाह *
बड़े घर की बेटी *
सद्गति *

एक दुनिया समानान्तर (राजेन्द्र यादव)

उपन्यास

महाभोज (मन्नू भण्डारी)
दिव्या (यशपाल) (तत्सम शब्दावली)

गोदान (प्रेमचंद)
मैला आँचल (फणीश्वर नाथ रेणु)

नाटक :
भारत दुर्दशा (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र) (कविताओं को होड़कर)
स्कन्दगुप्त (जयशंकर प्रसाद) (गीत होड़कर, तत्सम भाषा)
आषाढ़ का एक दिन (मोहन राकेश)

1950 - 60 → नवलेखन का दौर
→ एक दुनिया समानान्तर
→ आषाढ़ का एक दिन

③

वाङ्मय → वाक् + मय

↓

भाषिक अभिव्यक्तियो का सम्पूर्ण

भाषा →

1. व्यापक अर्थ
पशु - पक्षी
सांकेतिक

2. तकनीकी अर्थ
विशिष्ट
⇓
मनुष्यो की वह भाषा जो ध्वनियो से व्यक्त होती है।
↓
केवल वे जो उच्चारण अवयवो से व्यक्त होती है
↳ जो सार्थक शब्द निकलते हैं।

भाषा

मौखिक — लिखित
लिखित ↓ लिपि

वाङ्मय

वाङ्मय

- वार्ता
  - → बातचीत
  - ↓ अर्थ
  - ↓ महत्वपूर्ण
- शास्त्र
  - → तकनीकी अध्ययन
  - → वैज्ञानिक अध्ययन
  - ↓ शब्द महत्वपूर्ण
- साहित्य
  - ↓ शब्द - अर्थ के बीच महत्व के लिए प्रतिस्पर्धा
  - → स - हित का भाव हो-
  - → सौन्दर्य / रमणीयता होनी चाहिए

साहित्य

- पद्य
  - ↓ जो कविता के रूप मे है।
  - → लय
  - → छंद, तुक ⇒ अनिवार्य नही
- गद्य
  - → लय नही
- चंपू काव्य
  - ↓ गद्य - पद्य मिश्रित
  - भारत - दुर्दशा
  - स्कन्द गुप्त
  - मैला आँचल
  - यशोधरा

- छायावाद

प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी

- प्रयोगवाद

व्यंजना

1. शाब्दिक अर्थ मे कोई बाधा नही होगी अर्थात वह सम्भव होगा।

2. शाब्दिक अर्थ के सम्भव होने के बावजूद वक्ता और श्रोता दोनो समझ रहे होगे कि अभिप्राय या भावार्थ कुछ और है। यह दूसरा अर्थ ही व्यंजना वाला अर्थ है।

e.g. :- चौराहे पर लिखा है, जिनको जल्दी थी वे चले गये

रीति सम्प्रदाय

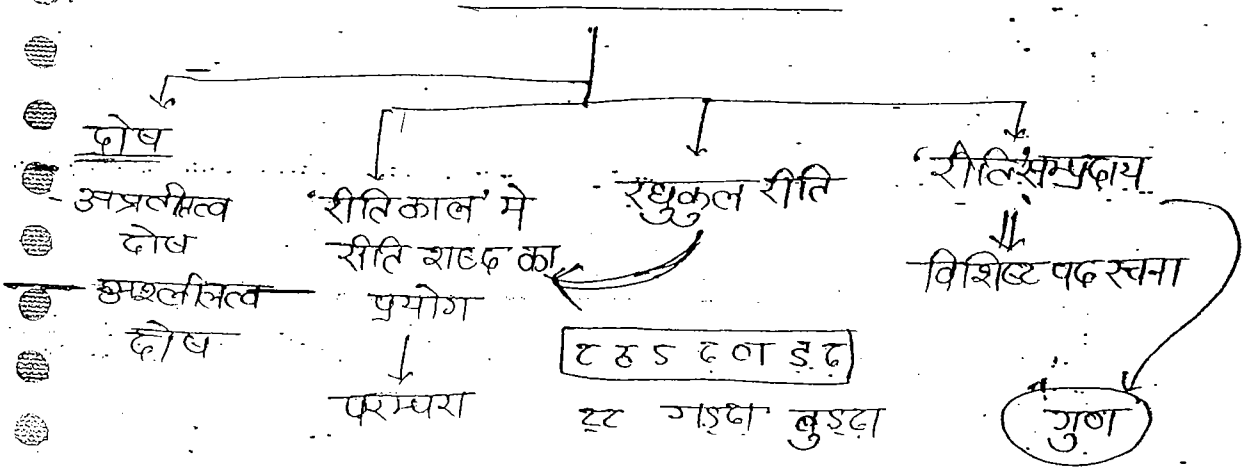

गुण

- माधुर्य (बिहारी, मीरा)
  - ह, म, ल, न
- ओज
  - दिनकर
  - ट ठ ड ढ ण ड़ ढ़
- प्रसाद
  - अर्थ समझना आसान

वक्रोक्ति → वक्र उक्ति

काव्य की आत्मा

- 27 भेद
  1. उपचार वक्रता
     - जो जैसा नहीं है उसे उस रूप मे प्रस्तुत कर देना, विशेष रूप से किसी जड़ वस्तु को चेतन वस्तु या मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करना।
     - छायावाद मे प्रकृति को मनुष्य के रूप मे देखा गया है
       - मानवीकरण
- शुक्ल
  - बुद्धि प्रेरित वक्रता
  - भाव प्रेरित वक्रता
    - सूरदास

रस - सम्प्रदाय

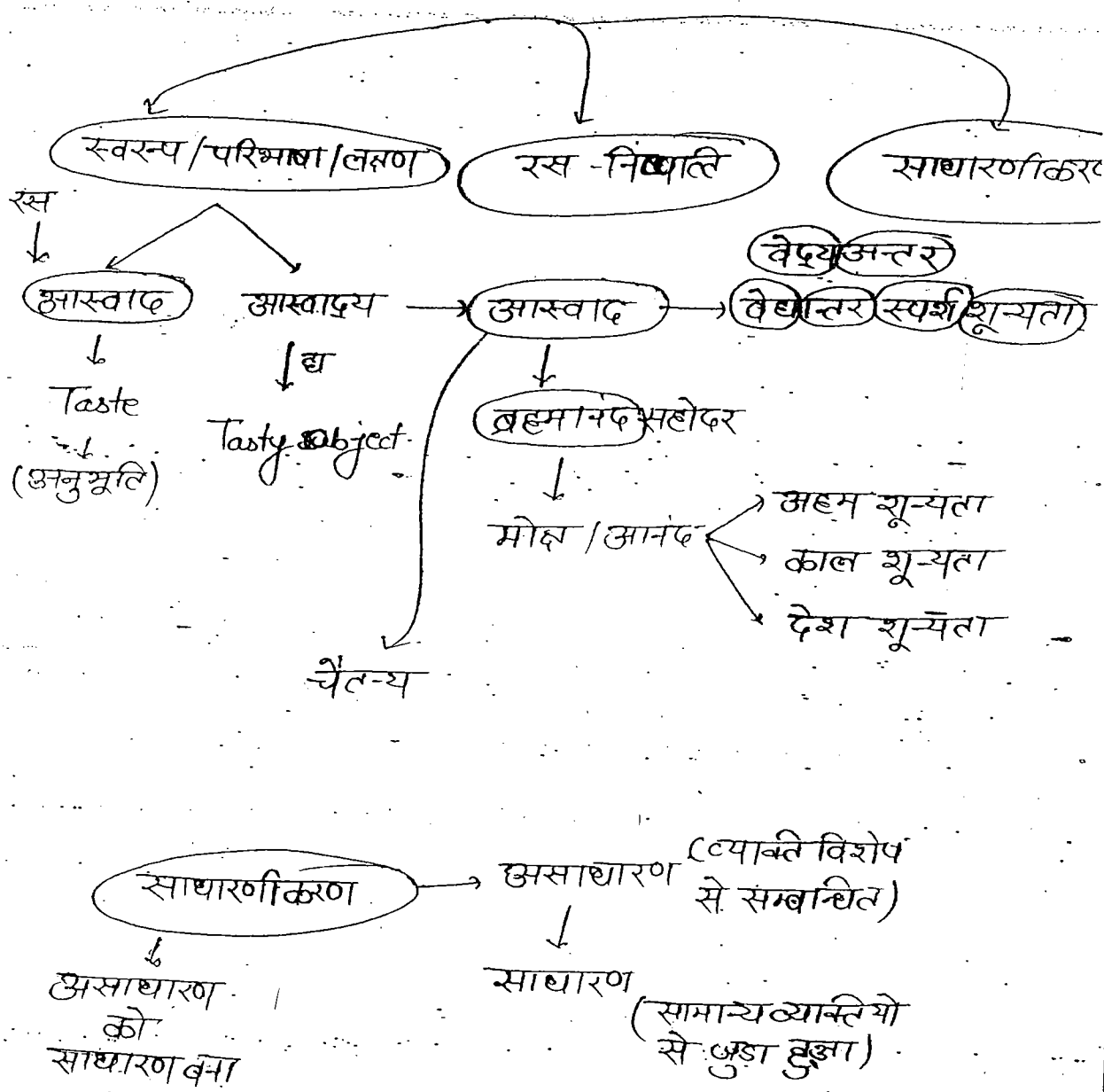

- स्वरूप / परिभाषा / लक्षण
- रस - निष्पत्ति
- साधारणीकरण

रस
- आस्वाद → Taste → (अनुभूति)
- आस्वाद्य → द्य → Tasty object

आस्वाद्य → आस्वाद → वेद्यान्तर स्पर्श शून्यता (वेद्य अन्तर)

आस्वाद → ब्रह्मानंद सहोदर → मोक्ष / आनंद
- अहम शून्यता
- काल शून्यता
- देश शून्यता

आस्वाद → चैतन्य

साधारणीकरण → असाधारण (व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित) → साधारण (सामान्य व्यक्तियो से जुड़ा हुआ)

साधारणीकरण → असाधारण को साधारण बना देना

रस सम्प्रदाय

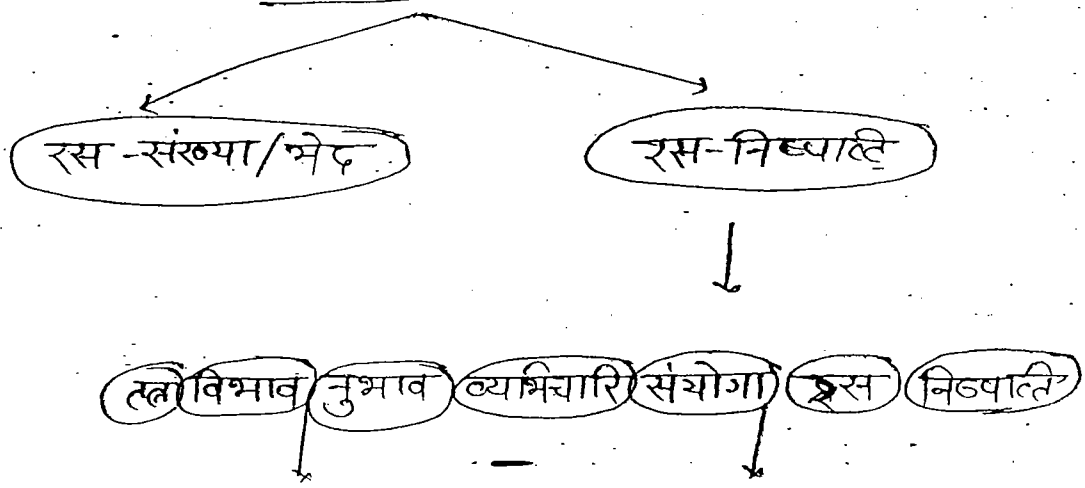

तत्र अर्थात् वहाँ पर (मंच पर) जब विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव (संचारी भाव) का संयोग (दर्शक के स्थायी भावो के साथ) होता है, तो (दर्शक के मन मे) रस की ~~निष्पत्ति~~ होती है।

(निष्पत्ति का अर्थ अभिव्यक्ति से है)

स्थायीभाव

↓

रस की सम्पूर्ण प्रक्रिया मे लगातार विद्यमान रहते हैं। स्थायीभाव की चरम अवस्था ही (परिपाक्व) ही रस की अवस्था है।

स्थायी भाव	रस
रति	श्रृंगार
शोक / दु:ख	करुण
उत्साह	वीर
क्रोध	रौद्र
हास	हास्य
निर्वेद	शांत
जुगुप्सा	वीभत्स
भय	भयानक
विस्मय	अद्भुत
ईश्वर विषयक रति	भक्ति
वात्सल्य	वत्सल

भक्ति, वत्सल → इन पर विवाद है।

रस - निष्पत्ति → दर्शक

रस - निष्पत्ति:
- विभाव → वे कारण जो भावों के मूल में है।
- अनुभाव
- संचारी भाव

विभाव

- आलंबन विभाव
  - जिस पर कुछ टिका हुआ है अर्थात् वे कारण जो भावो को उत्पन्न करते हैं।
  - दो प्रकार
    - उत्पन्न
    - विषय
      - जिसके प्रति कोई भाव पैदा हो
    - आश्रय
      - जिसके मन मे विषय के प्रति भाव पैदा हो.
- उद्दीपन विभाव
  - वे भाव कारण जो भावो को गाढा करते हैं।
    - वाह्य वातावरण
    - विषय की चेष्टाएं

अनुभाव / अभिनय

- यत्नज
  - कायिक/आंगिक
    - शरीर के अंगो के माध्यम से अनुभव करना
  - वाचिक
    - बोलकर
  - आहार्य
    - वेशभूषा
- अयत्नज / सात्विक
  - जड़ता
  - कंप
  - प्रलाप
  - अश्रु
  - विवर्णता
  - स्वेद